Golden Research Thoughts
Vol -2 , ISSUE –11, May.2013
ISSN:- 2231-5063
Available online at www.aygrt.net

ORIGINAL ARTICLE

आधुनिक हिन्दी साहित्य अनुसंधान की संभावनाएँ उपन्यास विशेष के संदर्भ में

कल्पना मा. व्हसाले
हिन्दी विभाग प्रमुख, स्वा.रा.ती. महाविद्यालय,
अंबाजोगाई जि. बीड

प्रास्ताविक-

विश्वविद्यालयों मे हिन्दी अनुसंधान कार्य पर्याप्त रुप में हो चुका है. आज मत व्यक्त किए जा रहे है कि हिन्दी क्षेत्र में जिस स्तर के अनुसधान कार्य हेने चाहिए वे नही हो रहे है. यह बात काफी हद तक सच भी है, इसके कई कारण हो सकते है. प्रमुख कारण है नौकरी के लिए अनुसंधान डिग्री की आनिवार्यता. अनुसंधान के साथ जिज्ञासावृत्ति, ज्ञानक्षेत्र का विस्तार करना, परिक्षण, निरीक्षण, निष्कर्ष आदि बाते गौणरुप में जोडे जा रहे है, परिणामत: अनुसंधान कार्य की अच्चता, श्रेष्ठता नष्ट होकर कार्य पूर्णता का महत्व बढ गया है, चाहे वह किसी भी प्रकार पूरा है.

सृष्टि में ज्ञान के विविध क्षेत्र है, इसका प्रतिनिधित्व करने के लिए विविध विषय भी है जैसे अर्थशास्त्र, तर्कशास्त्र, भौतिक शास्त्र इनकी अध्ययन सामुग्री एक दुसरे से भिन्न है. किन्तु यही सब संपूर्ण अनुसंधान की वस्तु है. अनुसंधान कार्य अज्ञात को ज्ञात बनाकर ज्ञात है उसका पुनर्विवेचन करके स्पष्ट और व्यवस्थित बनाकर उसके तथ्यों का विश्लेषण करके सिध्दान्त निर्धारित करना है.

आधुनिक काल में अनुसंधान कार्य को इस दृष्टीसे देखा जा रहा है क्या यह भी अभ्यास का विषय है. वर्तमान स्थिती में अनुसंधन कार्य संतोषजनक हो इसलिए विव्दानों व्दारा दि गई दिशा को दुबारा देखना आवश्यक हो गया है.

जैसे - डॉ. विनय मोहन शर्माने कहा है, "शोध एक स्वत: प्रवाहमय किया है जिसका आदि तो है पर अन्त नही है."

डॉ. रामगोपाल शर्मा दिनेश का कहना है, "कोई भी साहित्यिक जब परिष्कृत, प्रमाणित संदेह रहित और तथ्यपूर्ण होकर सामने आता है तब वह शोध का परिणाम बनता है."

इस अर्थ में अनुसंधान एक प्रक्रिया है, जो अज्ञात को ज्ञात करना ज्ञात का पुनर्विवेचन करके, ज्ञान के सीमाओं का विस्तार कर प्रामाणिक निष्कर्ष प्रस्तुत करता है.

अनुसंधान की दृष्टि से हिन्दी क्षेत्र को तीन भागों मे विभक्त किया जा सकता है, १) हिन्दी भाषा २) हिन्दी साहित्य की ३) हिन्दी संस्कृति. आधुनिक हिन्दी क्षेत्र में अधिकतर अनुसंधान कार्य हिन्दी साहित्य में ही हुआ है. इसमें भी विशेष रुप से कथासाहित्य में.

साहित्य क्षेत्र में आधुनिकता यह संकल्पना दो अलग-अलग अर्थो में प्रयोग में लाई जाती है. एक अर्थ केवल कालवाचक होता है तो दुसरा अर्थ मूल्यवाचक.

पहले अर्थ में आधुनिकता अर्थात अभी का, इस क्षण का विद्यमान स्थिति का चालू घडी का, इस अर्थ में काल का एक काल के रुप में चित्रण होता है. इसमें नैतिकता स्पंदित नही होती ना ही इस कालचित्र कें किसी भी रंग को मुख्य रंग लगा हुआ नही होता. इस अर्थ में प्रत्येक काल का व्यक्ति उस काल में आधुनिक ही होता है. अर्थात, मनु. शंकराचार्य, ज्ञानेश्वर हर एक आपने काल में आधुनिक ही थे लेकिन आधुनिक शब्द को जब मूल्यवाचक अर्थ में ग्रहन किया जाता है तब विविध मूल्यों से प्रज्वलित कालस्वभाव हमारे सामने खडा होता है. इहवाद, बुध्दिप्रामाण्यवाद, व्यक्ति स्वातंत्र्यवाद यह आधुनिक जीवनमूल्य है. जिस समाज और व्यक्तिके व्दारा जिस क्षण से आधुनिक जीवनमुल्यों का स्वीकार किया जाता है. तबसे वह समाज और व्यक्ति दोनों मूल्यात्मक दृष्टिसे आधुनिक कहलाते है.

इस अर्थ में आधुनिक होना याने समकालीन होना है. यह एक विवादीत जीवनदृष्टी है जो जीवनमूल्यों में नविनता, परिवर्तन, प्रगती इनका समावेश ही नही करता परंपरावादी जीवन मूल्यों को निचे सुरंग लगाकर उसे तहस-नहस कर देता है. आधुनिकता इस दृष्टि से एक समझ है.

आधुनिक हिन्दी साहित्य में आज विविध विधाएँ प्रस्तुत है जिनमें कहानी, नाटक उपन्यास कथानक आदि विधाएँ है. मूल्यात्मक दृष्टिकोनसे आधुनिक साहित्य के रुप में उपन्यास विधा में अनुसंधान की संभावनाऐं नजर आती है.

उपन्यास ही एक ऐसी विधा है, जिसमें संघर्षशील मानव के चरित्र का प्रभावोत्पादक एवं अविकल चित्र होता है. युगजीवन और आधुनिकता बोध को समग्र रुप में व्यक्त करने की क्षमता अन्य विधाओं की अपेक्षा उपन्यास में ही अधिक है. उपन्यास जीवन के छोटेसे छोटे, साधारण से साधारण तथ्यों को भी पूरी स्वच्छता स्पष्टता, पूर्णता के साथ प्रस्तुत करता है. आधुनिक जीवन की मुख्य प्रवृत्तियों मे यथार्थता, स्पष्टवादिता, माँसलता, बौध्दिकता एवं गतिशिलता का अंकन उपन्यास ही सक्षम रुप में कर सकता है. उसका अर्थ है - मुलभूत अधिकारों से वंचित, साम्राज्यवाद, पूँजीवादी शोषक व्यवस्था व्दारा पिडित जातिवाद, रुढियाँ आर वर्ण व्यवस्था है. भयंकर देश सें जर्जरित एवं रतिमूलक, यौन भावना परक अन्तर्व्दव्द से जुझने वाला मानव, नारीपर होते हूंए अन्याय (नारी विमर्श) अन्याय के विरुध्द उसका संघर्ष, तेजी से उभरता हुई दलित विमर्श भी आज उपन्यासों का विषय बन चुका है. यूँ कहना गलत न हो की २० वी सदी के उत्तरार्ध और २१ की सदी के पुर्वार्ध में नारी और दलित विमर्श को उपन्यास में भी प्रमुखता प्राप्त है. लेखिका मैत्रयी पुष्पा, मृदुला गर्ग, राजीसेठ, शशिप्रभा शास्त्री, निलीमा सिंह आदि लेखिकाओं ने चाक, चीतकोबरा, ततसम कर्करेखा, स्वीकार है, मुझे-जैसे उपन्यास में नारी विमर्श को तो यादवेन्द्र शर्मा, ओमप्रकाश वाल्मीकी, राजेंद्र यादव, शिवकुमार कश्यप, सुखबिर सिंह, तेजराना आदीने आधुनिक साहित्य में दलित साहित्य विमर्श को प्रस्तुत किया है.

पास में स्थित वस्तु या जीवनानुभूतिका अर्थ है उपन्यास जीवन की निकटता स्वच्छता और स्वाभाविकतासे चित्रण मात्र उपन्यास विधामें ही होता है उस में जो अपना और आत्मिय है वह मिलता है इसलीय उपन्यासोंपर अधिकसे अधिक अनुसंधान होना आवश्यक है.

अबतक -आधुनिक उपनयासों मे मानवी जीवन की सहज अभिव्यक्ति ही नही क्रान्तिकारी परिवर्तन दिखाई देता है. युवा से सामाजिक सांस्कृतिक जीवन की प्रतिक्रियाएँ. युग जीवन के यथार्थ को पकडने का प्रयास, परिवर्तन परीस्थितियों के अनुरुप आधुनिकता-बोध की व्यंजना महानगरों मे अमानवीकरण की प्रक्रिया, संबंधो के टुटते हुए पूल, दाम्पत्य संबंधों में आता हिमपात, माँसाहारी दफ्तरी परिवेश दिशाहीनता में सही मुहावरें की तलाश में भटक रहा युवा शक्तिका आक्रोश, सता के अन्नपर पल रही दिल्लीमुखी बुध्दिजीविकों की एक नस्ल, आदी का यथार्थ चित्रण प्राप्त है. आधुनिक काल में हमारे ब्राम्हणी सभ्य विचार टुटकर मांसाहारी बनते जा रहे है. सही में आधुनिक मानव 'पैन-इटटस' बन गया है. आदि का खूला चित्रण हुआ है. वाल्टर एलन की मान्यता के अनुसार 'उपन्यास के अस्तित्व का मूल आधार जीवन का प्रस्तुतीकरण है' वह मानव जीवन की अभिव्यक्ति एवं व्याख्या है, के आधारपर जनता के प्रत्येक वर्ग को आशा आकांक्षामें को प्रतिबिंबित करनेवाली आज की सर्वश्रेष्ठ महत्वपूर्ण जनतांत्रिक विधा उपन्यास है. सामाजिक ध्वसांत्मक प्रवृत्तियों से लेकर सामाजिक पुननिर्माण तक का विशद चित्रण इसी विधा में हो सकता है. विचारवंता लुकास हो या रैल्फ फॉक्स हे. या अल्बर्ट सभी नें समाज जीवन को पूर्णरुपेन प्रस्तुत करनेवाली विधारुप में उपन्यास को स्वीकारा है.

ऐसी इस विधा में चित्रित विविध विचार - विषयों पर अनुसंधान होना आवश्यक है.

अबतक परिवारिक, वैयक्तिक, सामुदायिक, साप्रदायिक, बेकारी, समोपदेषक, व्यापारी, मजदूर, स्त्री-पूरुष संबंध राजनैतिक स्वार्थनंधता, अंधश्रध्दा, बेकारी, आँचलिक, ग्रामीण, शैक्षणिक व्यवस्थाविषयक नारी, दलित अदिपर अनेको लेखकोने संवेदनशील मूल्यात्मक, विमर्श का प्रस्तुतीकरण किया है.

अनुसंधान कर्ता को चाहिए आधुनिक संदर्भ में इनपर वह नयी रोशनी डाले. उपन्यास में केवल मांसल, नारीका विचार देखने की बनाए सांस्कृतिक सिध्दान्त धर्मशास्त्रीय सिध्दान्त भारत में सामाजिक समस्याओं की प्रवृत्ति, कामकाजी स्त्री का जीवन बढते अपराध, बाल अपराध आत्महत्या, नशीली पदार्थोंका सेवन गतीसे टुट रहे आपस स्नेह संबंध तलाक की समस्या, राजनीतिक भ्रष्टाचार शिक्षा के विस्फोटसे निर्माण बेकारी, विशिष्ट वर्ग में सीमटा धन अस्पृश्यता और सबसे गहन प्रश्न बनती हुई सांप्रदायिकता आदीपर दृष्टि डाले परिणामस्वरुप -घीसे पीटे विषयों पर होनेवाले अनुसंधान जीनका कोई महत्व नही बचा है, उसे फिरसे अनसंधान के लिए ना चुने इस प्रकार से यह होगा की अनुसंधन को नई दिशा मिलेंगी -

उपन्यास में -१) खलनायक -नायीका का चित्रण अर्थात मनुष्य की खलवृत्ति का चित्रण हो रहा है - अनुसंधान के व्दारा बढती हुई इस वृत्ति के पीछे के कारण काअनुसंधान होना आवश्यक है.

२) उपन्यास में बालवृत्ति का चित्रण ३) तृतियपंथीय -मानसिकता तृतीयपंथीयों की समस्या -समाधान ४) उपन्यासों की भाषा ५) संस्कृति ६) शिक्षितों की मानसिकता तुलनात्मक अध्ययन

अनुसंधान का कार्य उत्कृष्ट हो इसलिए - अनुसंधान कर्ता के लिए शोधपूर्ण प्रशिक्षण आवश्यक है. तो साथही निरीक्षक के लिए उसकी सिमाओं को देखते हुए ३-४ विद्यार्थियों को ही सौंपा जाए -वह हमेशाके लिए निर्देशकही रहे अध्यापक नही. विदेशों की तरह निर्देशक कक्ष पूर्णत: स्वतंत्र

हो. मुख्यरुपसे अनुसंधान कार्य ज्ञान-बुध्दि का आधार बने न की उपाधि-प्राप्ति का साधन अन्यथा भविष्य में अनुसंधान कार्य व्यवसाय बन रहा है बनकर ही रहेगा.

संदर्भ सूची :

१) हिन्दी अनुसंधान के आयाम / डॉ. भ.ह.राजूरकर, डॉ. राजमल बोरा.
२) हिन्दी अनुसन्धान / डॉ. विजयपालसिंह
३) नवीन शोध विज्ञान /डॉ. तिलक सिंह
४) १) हिन्दी साहित्य : बिसवी शताब्दी २) आधुनिक साहित्य आ. नन्ददुलारे बाजपेयी.